

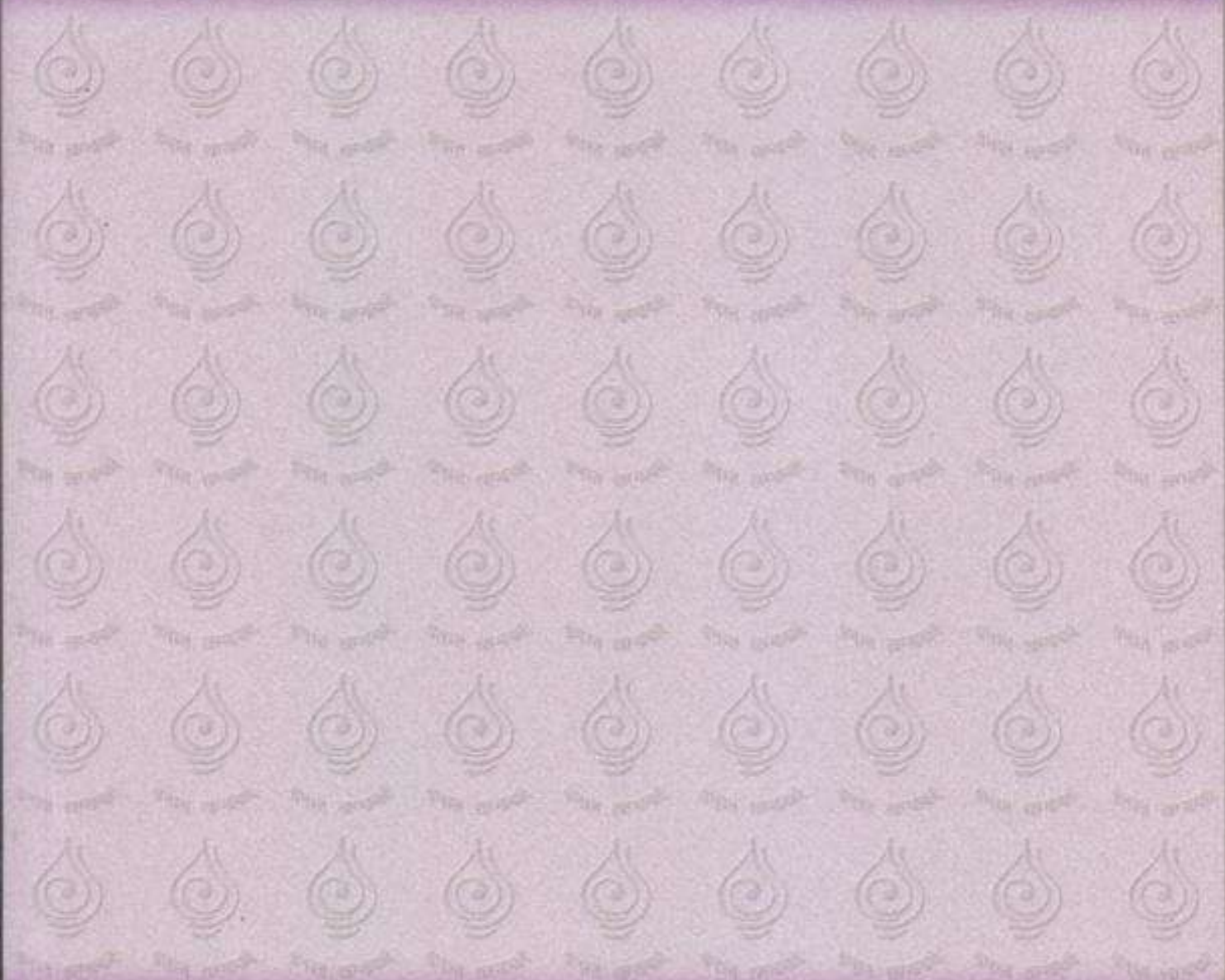
तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

वर्ष 34 • अंक 132-133 • जुलाई-दिसम्बर, 2006

Research Quarterly

अनुसंधान त्रैमासिकी



जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

(मान्य विश्वविद्यालय)

योग्यता लक्ष्यकारी

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

(DEEMED UNIVERSITY)

तुलसी प्रज्ञा

TULSI PRAJÑĀ

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

Vol. : 132-133

JULY - DECEMBER, 2006

Patron

Samani Dr Mangalprajna
Vice-Chancellor

Editor in

Hindi Section

Dr Mumukshu Shanta Jain

English Section

Dr Jagat Ram Bhattacharyya

Editorial-Board

Dr Mahavir Raj Gelra, Jaipur
Prof. Satya Ranjan Banerjee, Calcutta
Dr R.P. Poddar, Pune
Dr Gopal Bhardwaj, Jodhpur
Prof. Dayanand Bhargava, Ladnun
Dr Bachh Raj Dugar, Ladnun
Dr Hari Shankar Pandey, Ladnun
Dr J.P.N. Mishra, Ladnun



Publisher :

Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun-341 306

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL.-132-133

JULY — DECEMBER, 2006

Editor in Hindi

Dr Mumukshu Shanta Jain

Editor in English

Dr Jagat Ram Bhattacharyya

Editorial Office

Tulsī Prajñā, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)

LADNUN-341 306, Rajasthan

Publisher : Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306, Rajasthan

Type Setting : Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306, Rajasthan

Printed at : Jaipur Printers Pvt. Ltd., Jaipur-302 015, Rajasthan

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers, the Editors may not agree with them.

अनुक्रमणिका/CONTENTS

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
सापेक्षता और अनेकांत : विज्ञान और दर्शन	प्रो. दयानन्द भार्गव	1
पुरुषार्थ सिद्धयुपाय में अहिंसा-विमर्श	प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन	21
नर-लोक से किन्नर-लोक तक	जतनलाल रामपुरिया	33
सिद्धों के अनेक भेदों का प्रतिपादन	साध्वी श्रुतयशा	41
भगवती आराधना में निदान वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में	डॉ. पारसमल अग्रवाल	47
तीर्थंकरों की मूर्तियों पर उकेरित चिह्न	डॉ. उमाकान्त पी. शाह	56
कारण का स्वरूप : जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में	सुश्री श्वेता जैन	63
अपरिग्रह एवं उसका लोकोपकारी स्वरूप	सुमत जैन	72

अंग्रेजी खण्ड

Subject	Author	Page No.
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	81
Specialized Functions ...	Dr J.P.N. Mishra and Dr M.K. Singh	91
Jain Business Ethics ...	Samani Shashi Prajna	103

नवीनता की सार्थकता

नई सदी का प्रवेश नए संकल्पों के साथ हो,
तभी इस 'नया' शब्द की सार्थकता हो सकती है।

1. मैं संयमप्रधान जीवनशैली का विकास करूँगा।
2. मैं समताप्रधान जीवनशैली का विकास करूँगा।
3. मैं सदाचारप्रधान जीवनशैली का विकास करूँगा।

ये तीन संकल्प नई शताब्दी अथवा नई सहस्राब्दी में
विद्यमान इस 'नया' शब्द को सार्थकता दे सकते हैं।

- अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ